

दां.प्रकी.(जमा.) 4377/2004

07.12.2004

माननीय न्यायाधिपति श्री कृष्ण कुमार

प्रार्थी के अधिवक्ता सुश्री उषा दवे,
जन अभियोजक श्री ओ.पी. राठी उपस्थित।

योग्य अभिभाषक अभियुक्त-प्रार्थी का तर्क है कि अभियुक्त पूर्व में जमानत पर था। अभियुक्त के विरुद्ध धारा 341, 323, 324 एवं 34 भा.दं.सं. के अन्तर्गत चार्जशीट पेश हुई थी और अभियुक्त जमानत पर आजाद था। दिनांक 25.6.1998 को गैरहाजिर हो गया उसके बाद दिनांक 28.9.2004 से वह न्यायिक हिरासत में है। अभियुक्त जमानत का दुरुपयोग नहीं करेगा, उसे पुनः एक बार जमानत पर रिहा किया जावे।

योग्य जन अभियोजक ने प्रार्थना-पत्र पर एतराज किया।

मैंने दोनों पक्षों के तर्कों पर विचार किया। चूंकि अभियुक्त दिनांक 28.9.2004 से न्यायिक हिरासत में है, उसके खिलाफ सभी आरोप काबिल जमानतीय है, न्याय हित में अभियुक्त को पुनः जमानत का लाभ दिया जाना उचित पाता हूं।

अतः यह प्रार्थना-पत्र स्वीकार किया जाता है और आदेश दिया जाता है कि यदि प्रार्थी गुरविन्द्रसिंह उर्फ गिन्द्री पुत्र गोपालसिंह योग्य विचारण न्यायालय के संतोषप्रद उनके न्यायालय में नियत तिथियों पर एवं जब भी उसे बुलाया जावे, उपस्थिति हेतु, बीस हजार रूपए का बन्ध-पत्र एवं दस-दस हजार रूपए की दो प्रतिभूतियां प्रस्तुत करे तो उसे

जमानत पर रिहा कर दिया जावे।

(न्यायाधिपति कृष्ण कुमार)

जी.एन.शर्मा